*Enhanced Edition
NEP 2020 Guidelines

ज्ञान सरोवर हिंदी व्याकरण

अध्यापक सहायक-पुस्तिका

5

YBPL
YELLOW BIRD PUBLICATIONS PVT. LTD.
EDUCATIONAL PUBLISHER

ज्ञान सरोवर हिंदी व्याकरण कक्षा-5

अध्याय-1 : भाषा और व्याकरण

(क) 1. स 2. ब 3. अ 4. ब

(ख) 1. अर्थपूर्ण 2. मौखिक 3. लिखित 4. व्याकरण 5. लिपि

(ग) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗ 6. ✗

(घ) 1. लिखित 2. मौखिक 3. मौखिक 4. लिखित 5. मौखिक 6. मौखिक

लिखित:

1. 'भाषा' शब्द की उत्पत्ति संस्कृत की 'भाष्' धातु से हुई है, जिसका अर्थ है- 'बोलना'। जो बोली जाती है, वह 'भाषा' है।
2. मौखिक भाषा– जिस भाषा को मुख से बोला और कानों से सुना जाता है, उसे 'मौखिक भाषा' कहते हैं। जैसे: नेताजी द्वारा भाषण देना।
   लिखित भाषा– मन के भावों तथा विचारों को जब लिखकर प्रकट किया जाता है, तो वह भाषा का 'लिखित रूप' कहलाता है। जैसे: रवि द्वारा पत्र लिखना।
3. लिखित भाषा अपना अलग ही महत्व रखती है। विश्व के सभी महत्त्वपूर्ण कार्य लिखित भाषा में ही होते हैं। इस भाषा का रूप स्थायी है। लिखित भाषा के कारण ही हमारा अनुपम प्राचीन साहित्य सुरिक्षित है।
4. भाषा का क्षेत्रीय रूप 'बोली' कहलाता है। कुछ प्रमुख बोलियाँ हैं–
   अवधी, बहोली, छत्तीसगढ़ी, मालवी, मेवाती, मारवाड़ी आदि।
5. व्याकरण के प्रमुख अंग हैं–
   i) वर्ण विचार: इसके अंतर्गत अक्षरों (वर्णों) के आकार, प्रकार, उनके लिखने की विधि तथा उच्चारण आदि पर विचार किया जाता है।
   ii) शब्द विचार: इसके अंतर्गत शब्दों के रूप, भेद, महत्त्व और उनकी उत्पत्ति-तथा बनावट आदि पर विचार किया जाता है।
   iii) वाक्य-विचार: इसके अंतर्गत वाक्यों की रचना, उनके भेद, उपभेद, उनके पारस्परिक संबंध, रूपांतरण, उनकी शुद्धता-अशुद्धता तथा विराम चिह्नों आदि पर विचार किया जाता है।

विविध:

1. स्वयं कीजिए।
2. हिंदी
3. स्वयं कीजिए।

अध्याय-2 : वर्ण विचार

(क) 1. ब 2. स 3. ब 4. स 5. अ

(ख) 1. संयुक्त व्यंजन 2. द्‌वित्व व्यंजन 3. व्यंजन 4. वर्णमाला 5. स्वरों

(ग) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓ 6. ✓

7. ✗ 8. ✗ 9. ✓

(घ) स्वर – उ, ऋ, ऐ, ऊ, आ, ओ, इ, ई, ए, अ

व्यंजन – ट, र, ल, त, न, श, क, ग, छ, ध, फ, छ, ख, ष, द, ह, य, ब, भ, ढ, ठ, ड, च

(ङ) 1. ऐ (ै) 2. ा 3. ू 4. े 5. ो 6. ू

7. ु 8. ू 9. ौ

लिखित:

1. ध्वनियों को संकेत-चिह्‌नों के रूप में लिखकर प्रकट किया जाता है। ध्वनियों के यही संकेत-चिह्‌न 'वर्ण' कहलाते हैं।
2. स्वतंत्र रूप से बोले जाने वाले या बिना किसी दूसरे वर्ण की सहायता के बोले जाने वाले वर्ण 'स्वर' कहलाते हैं।
   स्वर वर्ण: अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ
3. ऐसे वर्ण, जिनके उच्चारण में स्वरों की सहायता ली जाती है, 'व्यंजन' कहलाते हैं। भेद: स्पर्श, अंत:स्थ, ऊष्म
4. आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ
5. अं और अ: संयुक्त रूप से 'अयोगवाह' कहलाते हैं। इनका न स्वरों से योग है ओर न व्यंजनों से। इसी कारण ये 'अयोगवाह' कहलाते हैं।
6. संयुक्त व्यंजन– इनकी रचना दो या दो से अधिक व्यंजनों के संयोग से होती है। संयुक्त व्यंजन हैं: क्ष, त्र, ज्ञ, श्र।
   द्‌वित्व व्यंजन– जब एक व्यंजन ध्वनि अपने ही जैसी अन्य व्यंजन ध्वनि से मिलकर एक हो जाती है, उसे 'द्‌वित्व व्यंजन' कहते हैं इसमें पहला व्यंजन स्वर रहित होता है।

विविध:

1. संयुक्त व्यंजन	द्वित्व व्यंजन
इनकी रचना दो या दो से अधिक व्यंजनों के संयोग से होती है।	जब एक व्यंजन ध्वनि अपने ही जैसी अन्य व्यंजन ध्वनि से मिलकर एक हो जाती है, उसे 'द्वित्व व्यंजन' कहते हैं।
उदाहरण: क्ष, त्र, ज्ञ, श्र	उदाहरण: सच्चा, कच्चा, मरम्मत। द्वित्व व्यंजन में पहला व्यंजन स्वर रहित होता है।

2. अनुस्वार: अंधकार, अंधेरा, कंकड़, गंगा, पंचायत, हंस, दंग
   अनुनासिक: गाँव, साँप, ऊँट, ध्वनियाँ, तितलियाँ

अध्याय–3 : उच्चारण और वर्तनी

(क) 1. ब 2. ब 3. स 4. अ 5. स 6. ब

लिखित:

(ख) 1. साप्ताहिक 2. बीमार 3. विज्ञान 4. हानि 5. नीरोग
6. समुद्र 7. परीक्षा 8. अधीन 9. चन्द्र

विविध:

(क) शुद्ध – विज्ञान, दवाई, प्रतिक्षा, मृत्यु, पर्वत, अंधकार, आँखें
अशुद्ध – ग्यान, पाठशालाए, दवाईयाँ, अंडा, परिक्षा, भूमि, सनग्राम

अध्याय–4 : शब्द विचार

(क) 1. स 2. ब 3. अ 4. अ 5. स

(ख) 1. अक्षि 2. भीख 3. टेलीफ़ोन 4. हाथ 5. चार

(ग) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓

लिखित:

(क) 1. सीमा, पुस्तक, कमल 2. मैं, तुम, हमारा 3. काला, गहरा, सुंदर
4. लड़ना, हँसना, जाना 5. धीरे–धीरे, ध्यानपूर्वक

(ख) 1. लंब+उदर 2. पम्+कज 3. दश+आनन 4. नील+कंठ 5. नील+कमल

(ग) 1. आठ 2. चूरन 3. किसान 4. बहिन 5. कुआँ 6. मोर

विविध:

	तत्सम	तद्भव		तत्सम	तद्भव
1.	दंत	दाँत	6.	गृह	घर
2.	अमूल्य	अमोल	7.	घटिका	घड़ी
3.	अन्न	अनाज	8.	छिद्र	छेद
4.	उच्च	ऊँचा	9.	ज्योति	जोत
5.	कदली	केला	10.	तीर्थ	तीरथ

अध्याय–5 : शब्द रचना

(क) 1. ब 2. अ 3. स 4. अ 5. स

(ख) 1. अपना 2. शब्दों 3. ध्वनियों 4. वान 5. बुरा

(ग) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓

लिखित:

(क) 1. समझदार 2. दयनीय 3. पुजारी 4. दयालु 5. धनी
6. बचत 7. अपनापन 8. दिखावट

(ख) 1. पराधीन 2. सेनापति 3. बारहसिंगा 4. पीतांबर 5. धनहीन
6. चोराहा 7. देशभक्ति

(ग) 1. स्वागत 2. देवालय 3. विद्यालय 4. मतैक्य 5. हरीश
6. नरेंद्र 7. परमार्थ 8. परमाणु

(घ) 1. शब्द-निमार्ण हेतु शब्दों के पूर्व जो शब्दांश जोड़े जाते हैं, वे 'उपसर्ग' कहलाते हैं। उदाहरण: कु, अप, अव, आ आदि।

2. शब्द निर्माण हेतु मूल शब्द के अंत में जो शब्दांश जोड़े जाते हैं, वे 'प्रत्यय' कहलाते हैं। उदाहरण: इक, वार, दार, आवट आदि।

3. 'संधि' का अर्थ है–मेल। व्याकरण में यह मेल दो वर्णों के निकट आ जाने से होता है। जैसे: विद्या+आलय=विद्यालय, सु+आगत=स्वागत

4. दो या दो से अधिक शब्दों को मिलाकर एक नया यौगिक शब्द बनाने को 'समास' कहते हैं। उदाहरण: बहिन और भाई=भाई-बहिन, दान में वीर=दानवीर

विविध:

पन – बाँकपन, लड़कपन, बालपन
इक – सामाजिक, पौराणिक, धार्मिक
ता – मधुरता, सुंदरता, बैठता

अध्याय-6 : शब्द भंडार

(क) 1. स　2. अ　3. ब　4. अ

(ख) 1. स　2. द　3. य　4. अ　5. ब

(ग) 1. द　2. य　3. अ　4. ब　5. स

लिखित:

(क) 1. गजानन, लंबोदर　2. श्री, कमल

3. निशा, रजनी　4. ध्वज, पताका

(ख) 1. जलद–मेघ, जलज–कमल　2. द्रव–तरल पदार्थ, द्रव्य–धन, पदार्थ

3. चरण–पैर, चारण–भाट　5. अरि–शत्रु, अरी–स्त्री के लिए संबोधन

6. अपेक्षा–इच्छा, उपेक्षा–अनादर

(ग) 1. शंका–संदेह　आशंका–भय

2. अस्त्र–ऐसा हथियार जिसका प्रयोग शत्रु पर फेंक कर किया जाए।

शस्त्र–ऐसा हथियार जिसे हाथ में पकड़ कर दुश्मन पर वार किया जाए।

3. ईर्ष्या–किसी की सफ़लता से जलन　द्वेष–घृणा/नफ़रत का भाव

(घ) 1. (i) सरोज, जलज　(ii) नग, गिरि　(iii) मेहमान, पाहुना

(iv) आग, पावक　(v) सुत, बेटा

2. (i) पत्र– पत्ता, चिट्ठी

(ii) अंबर– आकाश, कपड़ा

(iii) पृष्ठ– पत्ता, पीठ, पीछे का भाग

विविध:

1. घोड़ा : अश्व, घोटक, हय
2. अमृत : सुधा, अमी, पीयूष
3. माँ : अंबा, जननी, माता
4. जंगल : वन, अरण्य, कानन
5. आसमान : नभ, आकाश, अंबर
6. आँख : नेत्र, नयन, चक्षु

अध्याय–7 : संज्ञा

(क) 1. ब 2. अ 3. ब 4. स

(ख) 1. सुंदरता 2. मिठास 3. ठगाई 4. सज्जनता, दुष्टता

(ग) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✗

(घ) भाववाचक संज्ञाएँ –4., 7., 2, 5, 11, 6, 12

(ङ) 1. समूहवाचक 2. व्यक्तिवाचक 3. पदार्थवाचक 4. भाववाचक
5. समूहवाचक 6. पदार्थवाचक 7. समूहवाचक 8. भाववाचक

(च) 1. चतुर 2. कंजूस 3. मीठा 4. शत्रु
5. अहं 6. सर्व 7. हँस 8. चंद

(छ) 1. भगवान – जाति; श्रीकृष्ण – व्यक्ति; ब्रज – व्यक्ति
2. नेहरू – व्यक्ति 3. व्यक्ति – जाति 5. दिल्ली, लखनऊ – व्यक्ति
4. अयोध्या – व्यक्ति; प्रजा – समूह गाँव – जाति

(ज) 1. गुरूत्व 2. अपनापन 3. इन्सानियत 4. नारीत्व 5. बालकपन
6. शत्रुता 7. अच्छाई 8. देवत्व

(झ) छात्र, चाँदी, सेवा, कृषि, लोहा, पुस्तक, लकड़ी, चूना, चना, आगरा,
पूजा, कक्षा, गधा, मूर्ख, पहचान, स्टेशन, मानव

लिखितः

(क) 1. ताजमहल, मद्रास, कृष्ण 2. लड़का, लड़की, पुस्तक
3. मिठास, मानवता, सच्चाई 4. भीड़, दल, कक्षा
5. सोना, चाँदी, काँच

(ख) अगस्त, आकाश, पृथ्वी, रोहित, कबीर, चंद्रमा, रहीम, अकबर, ताजमहल, अरब सागर, रेशम, जवाहरलाल नेहरू, रेशमा, यमुना, अपूर्वा, मोहन, चेचक, आगरा, सोमवार

(ग) मनुष्य, मेज़, वृक्ष, फल, रेलगाड़ी, घड़ी, मोती, पत्थर, आम, कलम, पुस्तक, गाड़ी

विविधः

व्यक्तिवाचक : जंतर-मंतर, मद्रास, दिल्ली, रवि, सीमा

जातिवाचक : मित्र, पक्षी, पशु, इमारत, घर

भाववाचक : मित्रता, शत्रुता, अपनापन, मिठास, थकावट

अध्याय-8 : लिंग

(क)	1. स	2. ब	3. ब	4. अ	5. स
(ख)	1. पुल्लिग	2. स्त्रीलिंग	3. स्त्रीलिंग	4. पुल्लिग	5. पुल्लिग
(ग)	1. ✓	2. ✗	3. ✓	4. ✓	5. ✗
(घ)	1. स्त्रीलिंग	2. स्त्रीलिंग	3. पुल्लिग	4. स्त्रीलिंग	5. पुल्लिग
	6. स्त्रीलिंग	7. पुल्लिग	8. स्त्रीलिंग	9. पुल्लिग	

लिखित:

(क) 1. कुम्हारिन का गधा खो गया है। 2. मालकिन ने नौकर को निकट बुलाया।
3. गीत का गायक एक युवक है। 4. वह एक गरीब लड़की है।
5. अध्यापिका ने छात्र को दंड दिया।

(ख) 1. लिंग की पहचान का निर्णय प्राय: दो प्रकार से किया जाता है–
(i) शब्द के अर्थ से (ii) शब्द के रूप से
प्राणीवाचक शब्दों का लिंग-निर्णय अर्थ के अनुसार, जबकि वस्तुओं और पदार्थों का लिंग-निर्णय रूप के आधार पर होता है।

2. नित्य पुल्लिग अर्थात् ऐसे शब्द, जो हमेशा पुल्लिग रूप में प्रयुक्त होते हैं, जैसे- मंत्री, अध्यापक, तोता आदि।
नित्य स्त्रीलिंग अर्थात् ऐसे शब्द, जो हमेशा स्त्रीलिंग रूप में प्रयुक्त होते हैं, जैसे- लोमड़ी, मकड़ी आदि।

(ग) नित्य पुल्लिग: भेड़िया, उल्लू, ड्राइवर , मैनेजर।
नित्य स्त्रीलिंग: मैना, कोयल, सती, संतान।

विविध:

1. आम, सेब, केला, अमरूद, पपीता 2. लीची, रसभरी, मौसमी
2. मूँग, मक्की, अरहर 4. दरवाज़ा, पायदान, गलीचा, फूलदान
5. नायिका, छात्रा, चुहिया, भाग्यवती, नारी, पत्नी, चाची, बकरी, वृद्धा, धोबिन

अध्याय-9 : वचन

(क)	1. स	2. ब	3. ब	4. ब	5. अ
(ख)	1. संतरे	2. चादरें	3. लड़के	4. आँखें	5. ताले
(ग)	1. ✓	2. ✗	3. ✗	4. ✓	5. ✓

लिखितः

(क) 1. बातें　2. बूंदें　3. बच्चे　4. कपड़े　5. ताले
6. जातियाँ　7. पक्षीवृंद　8. भैंसें

(ख) 1. शीशा　2. वस्तु　3. पुस्तक　4. चादर　5. कुआँ
6. मशीन　7. पंखा　8. चूड़ी

(ग) 1. पंक्षीवृंद उड़ गए।　2. उनकी मशीनें खराब हैं।
3. अनेक फूल खिल गए।　4. उससे प्याले टूट गए।
5. डाकू भाग गया।

(घ) 1. शब्द के जिस रूप से उसकी संख्या का बोध हो, उसे 'वचन' कहते हैं।

2. एक वचनः विकारी शब्द के जिस रूप से उसके संख्या में 'एक' होने का बोध हो, उसे 'एकवचन' कहते हैं। जैसेः लड़की, औरत, गुड़िया, खिड़की आदि।
   बहुवचनः विकारी शब्द के जिस रूप से उसके संख्या में 'एक से अधिक' होने का बोध होता है, उसे 'बहुवचन' कहते हैं।
   जैसेः लड़कियाँ, औरतें, गुड़ियाँ, खिड़कियाँ आदि।

3. *शिष्ट तथा सभ्य लोग प्रायः 'तू' का प्रयोग नहीं करते। वे एक ही व्यक्ति के लिए तू के स्थान पर तुम का प्रयोग करते हैं। 'तुम' का बहुवचन रूप है।
   *हिंदी में आदर प्रकट करने के लिए एकवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग किया जाता है। जैसेः नानाजी किताब पढ़ रहे हैं।
   यहाँ यदि क्रिया का एकवचन रूप प्रयुक्त किया जाए, तो अनादर का भाव प्रकट होता है।
   *स्वाभिमान, प्रभाव और अधिकार दिखाने के लिए 'मैं' के स्थान पर 'हम' का प्रयोग करते हैं। जैसेः हमारे सामने तुमने यह चालाकी कैसे की?

4. *कभी-कभी जातिवाचक संज्ञा शब्द संपूर्ण जाति का बोध कराने के लिए, बहुवचन के स्थान पर एकवचन में प्रयुक्त होता है, जैसे- दशहरी आम सर्वोत्तम माना जाता है।
   *'गण, वर्ग, वृंग, दल' आदि शब्द अनेकता को सूचित करते हैं, परंतु इनका व्यवहार एकवचन के समान होता है, जैसे- पक्षीवृंद उड़ते चले जा रहे हैं।

विविधः

मशीन, किताब, खिड़की, अँगूठी, बेटा, दीवार, बच्चा

अध्याय-10 : वचन

(क) 1. ब   2. अ   3. ब   4. अ   5. अ

(ख) 1. ✗   2. ✓   3. ✗   4. ✗   5. ✓   6. ✓

लिखित:

(क) 1. तू हमें पढ़ा।   2. यह रो रहा है।   3. हमें लोटा दे दो।

4. हम आ गए हैं।   5. तुम कौन हो?

(ख) 1. मैं, तुम, वह   2. यह, ये, वे

3. कुछ, कोई, किन्हीं   4. स्वयं, खुद, आप

5. जिसने-उसने, जिसकी-उसकी, जो-वो

विविध:

हम बाज़ार गए थे।   मुझे नींद आ रही है।

तुम्हारा क्या नाम है?   कोई आया है।   यह कार मेरी है।

अध्याय-11 : कारक

(क) 1. स   2. ब   3. अ   4. ब   5. अ   6. स

(ख) 1. ने   2. पर   3. से   4. में   5. से   6. का

(ग) 1. ✓   2. ✗   3. ✓   4. ✓   5. ✓

(घ) 1. कर्त्ता   2. अपादान   3. करण   4. कर्म   5. संप्रदान   6. संबंध

लिखित:

(क) 1. बच्चे के लिए दूध लाओ।   2. नानी कहानी सुनाती है।

3. माँ बेटी के लिए फल लाई है।   4. सड़क पर मत खेलो।

5. चारपाइयाँ छत पर हैं।   6. यह लड़कों का विद्यालय है।

(ख) 1. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया करने वाले का बोध हो, उसे 'कर्त्ता कारक' कहते हैं। जैसे: रीमा ने खाना खाया।

कर्त्ता कारक का प्रयोग कारक चिह्न सहित व रहित, दोनों प्रकार से होता है।

2. वाक्य में प्रयुक्त जिस शब्द पर कर्त्ता द्वारा किए जाने वाले कार्य का प्रभाव पड़ता है, उसे 'कर्म कारक' कहते हैं।

जैसे: रवि ने रोहन को दो रुपए दिए।

विविध:

कर्त्ता (ने) कर्म (को) करण (से) संप्रदान (के लिए)
अपादान (से) संबंध (का, के, की)
अधिकरण (में, पर) संबोधन (हे, अरे)

अध्याय–12 : विशेषण

(क) 1. स 2. ब 3. स 4. ब 5. स 6. अ

(ख) 1. बिकाऊ 2. धार्मिक 3. विषैला 4. बनारसी 5. जंगली

(ग) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗

(घ) 1. वे – सार्वनामिक विशेषण 2. वे – सर्वनाम
3. तुम्हें – सर्वनाम 4. मुझे – सर्वनाम

लिखित:

(क) 1. संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द को 'विशेषण' कहते हैं। उदाहरण: सुंदर, बलवान, चालाक आदि।

2. जिस संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताई जाती है, उसे 'विशेष्य' कहते हैं। जैसे: 'मोटा हाथी' में मोटा 'विशेषण' है और हाथी 'विशेष्य'।

3. जो पद विशेषण की विशेषता बताता है, उसे 'प्रविशेषण' कहते हैं। जैसे: यह <u>बहुत</u> सुंदर जगह है।

4. मूलावस्था: जब किसी का गुण–दोष सामान्य रूप से कहा जाता है, तो उसमें तुलना नहीं, केवल वस्तु या प्राणी में निहित गुण–दोष का ही वर्णन किया जाता है।
जैसे: गिलास में <u>ठंडा</u> दूध है।
उत्तरावस्था: जब हम दो प्राणियों, वस्तुओं या स्थानों आदि की तुलना करते हैं, तो एक–दूसरे को अच्छा या बुरा बताते हैं, जैसे– कमल गेंदे से <u>सुंदरतर</u> है।
उत्तमावस्था: जब एक वस्तु की तुलना बहुत–सी वस्तुओं से की जाती है और उसकी विशेषता बताकर उसे सबसे श्रेष्ठ या निम्न बताया जाता है, तब वह उत्तमावस्था कहलाती है। जैसे: यह इस जंगल का <u>विशालतम</u> वृक्ष है।

विविध:

1. परिश्रमी 2. सच्चा 3. सुंदर 4. ईमानदार 5. मददगार

अध्याय–13 : क्रिया

(क) 1. अ 2. स 3. स 4. स 5. अ

(ख) 1. पत्र 2. घड़ी 3. दूध 4. नेता 5. बुद्धू, समझदार

(ग) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓

(घ) 1. दूँगा 2. होगा 3. पढ़ लिया है

(ङ) अकर्मक: उदय हो रहा है, चले गए, खेलते रहे

सकर्मक: चुन रहा है, खरीदी

(च) मुख्य कर्म: बैलों, राधा, मोहन, मुझे, राधा

गौण कर्म: चारा, चित्र, गेंद, कलम, रुपए

(छ) करना – 1, 2, 5 होना – 3, 4

लिखित:

1. जिस शब्द से किसी कार्य, घटना अथवा अस्तित्व का बोध हो, उसे 'क्रिया' कहते हैं। उदाहरण: हँसना, रोना, चलना आदि।
2. वाक्य में मुख्य क्रिया के अतिरिक्त कुछ अन्य क्रियाएँ भी प्रयुक्त होती हैं, वे 'सहायक क्रियाएँ' कहलाती हैं, जैसे – तोता उड़ता है। – यहाँ 'है' सहायक क्रिया है।
3. जिन क्रियाओं के दो कर्म होते हैं, वे 'द्विकर्मक क्रियाएँ' कहलाती हैं, जैसे पिताजी ने रवि को पुस्तक दी।
4. पूर्ति करने वाले तथा कमी/त्रुटि आदि को दूर करने वाले शब्द 'पूरक' कहलाते हैं।

विविध:

1. जब किसी वाक्य में दो क्रियाएँ एक साथ प्रयुक्त हुई हों और उनमें से एक क्रिया दूसरी क्रिया से पहले संपन्न हुई हो, तो पहले संपन्न होने वाली क्रिया को 'पूर्वकालिक क्रिया' कहते हैं। जैसे: मोहन खेलकर पढ़ने बैठेगा।, वह पढ़कर सोने गया।
2. जिस क्रिया से किसी प्रकार की आज्ञा का ज्ञान हो, उसे 'विधिवाचक क्रिया' कहते हैं। जैसे: घर जाओ। रुक जाओ।

अध्याय–14 : काल

(क) 1. अ 2. स 3. स 4. स 5. स

(ख) 1. अपूर्ण वर्तमान 2. संभाव्य भविष्यत्
3. पूर्णभूत 4. हेतु–हेतुमद् भूत
5. संदिग्ध भूत

(ग) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓

लिखितः

1. क्रिया के जिस रूप से कार्य के करने, होने या न होने के समय का बोध होता है, उस समय को 'काल' कहते है।
2. भूतकाल, वर्तमानकाल, भविष्यत्काल
3. सामान्य भूत, आसन्न भूत, अपूर्ण भूत, पूर्णभूत, संदिग्ध भूत, हेतुहेतुमद् भूत
4. सामान्य वर्तमान, अपूर्ण वर्तमान, संदिग्ध वर्तमान

   अपूर्णः क्रिया के जिस रूप से यह पता चले, कार्य वर्तमान काल में शुरू होकर अभी तक चल रहा है, उसे 'अपूर्ण वर्तमान काल' कहते हैं। जैसेः

   छोटा बच्चा रो रहा है।

   संदिग्धः क्रिया के जिस रूप से उसके वर्तमान समय में होने में संदेह हो, उसे 'संदिग्ध वर्तमान काल' कहते हैं। जैसेः छोटा बच्चा रो रहा होगा।
5. सामान्य भविष्यत्कालः क्रिया के जिस रूप से आने वाले समय में क्रिया का सामन्य रूप से होना पाया जाए। जैसेः हम सुबह खेलने जाएँगें।

   संभाव्य भविष्यत्कालः जब आने वाले समय में क्रिया के होने या करने की संभावना पाई जाए। जैसेः संभवतः आज बारिश आए।

विविधः

1. सीमा, गीता गा रही थी।
2. संभवतः कल तूफ़ान आए।
3. सीमा पढ़ रही है।
4. माँ खाना बना रही होगी।

अध्याय–15 : अविकारी शब्द

(क) 1. अ 2. अ 3. अ 4. ब 5. ब

(ख) 1. रीतिवाचक 2. परिणामवाचक 3. क्रियाविशेषण
4. कालवाचक 5. रीतिवाचक

(ग) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓

(घ) 1. तेज़ 2. सुंदर 3. बाहर 4. बाईं ओर 5. इधर-उधर

(ङ) 1. साथ 2. से पहले 3. के कानण 4. की भाँति 5. के नीचे

(च) 1. हाय! 2. हाँ-हाँ! 3. धत्! 4. छि:-छि:! 5. हाय! शबाश!

लिखित:

1. अविकारी शब्द वे शब्द होते हैं, जिनके रूप में लिंग, वचन, कारक, काल तथा पुरुष के कारण कोई परिर्वतन नहीं होता, जो सदा अपने मूलरूप में बने रहते हैं।
   भेद: 1. क्रियाविशेषण 2. संबंधबोधक
   3. समुच्चयबोधक 4. विस्मयादिबोधक
2. क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द को 'क्रियाविशेषण' कहते हैं।
   उदाहरण: वह खूब रोई। हाथी धीरे-धीरे चलता है।
3. 1. हर्षबोधक 2. शोकबोधक 3. आश्चर्यबोधक
   4. अभिवादन बोधक 5. क्रोधसूचक 6. घृणा व ग्लानिबोधक
   7. आशीर्वादबोधक 8. अनुमोदनबोधक 9. स्वीकारबोधक

विविध:

काल. 1. (i) वह रातभर पढ़ता रहा। (ii) सीमा आज आएगी।
स्थान. 2. (i) सोनू भीतर गया है। (ii) मक्खियाँ इधर-उधर उड़ रही हैं।
परिणाम. 3. (i) कुछ पी लो। (ii) कम बोलों।
रीति. 4. (i) शांतिपूर्वक बैठिए। (ii) वह ज़ोर-ज़ोर से बोल रहा है।

अध्याय-16 : वाक्य विचार

(क) 1. ब 2. ब 3. अ 4. अ 5. अ

(ख) 1. संदेहवाचक 2. प्रश्नवाचक 3. नकारात्मक
4. इच्छावाचक 5. विधानवाचक 6. संकेतवाचक
7. संदेहवाचक 8. विधानवाचक

(ग) 1. संयुक्त वाक्य 2. मिश्र वाक्य 3. संयुक्त वाक्य
4. सरल वाक्य 5. सरल वाक्य 6. मिश्र वाक्य

लिखित:

1. सार्थक शब्दों का ऐसा समूह, जो व्यवस्थित हो और कोई अर्थ देता हो, 'वाक्य' कहलाता है।
2. उद्देश्य, विधेय

3. वाक्य में जिसके विषय में कुछ बताया या विधान किया जाता है, उसे उद्देश्य कहते हैं। जैसे: सीमा पत्र लिखेगी।
उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा था बताया जाए, उसे 'विधेय' कहते हैं। जैसे: मीनू पढ़ रही है।
4. रचना के आधार पर वाक्य भेद
   (i) सरल वाक्य – जिस वाक्य में एक ही क्रिया होती है।
   जैसे: कुत्ता पानी पी रहा है।
   (ii) संयुक्त वाक्य – जहाँ दो अथवा दो से अधिक सरल वाक्य किसी समानाधिकरण समुच्चयबोधक से जोड़े गए हों।
   जैसे: वह पढ़ रहा था और हँस रहा था।
   (iii) मिश्र वाक्य – जिस वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य तथा एक या अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं।
   जैसे: जो मेहनत करता है, वह सफ़ल होता है।

अध्याय–17 : विराम चिह्न

(क) 1. स   2. ब   3. ब   4. ब   5. अ

लिखित:

(क) 1. बोलते या पढ़ते समय, वाक्य के अंत या बीच में अथवा किसी कथन पर किसी स्थान पर बल देने या समझने आदि के लिए हमें रुकना पड़ता है। रुकने की यह स्थिति 'विराम' कहलाती है तथा लेखन में इसे जिन चिह्नों द्वारा व्यक्त किया जाता है, वे 'विराम चिह्न' कहलाते हैं।
2. जहाँ वाक्य की गति अंतिम रूप ले ले, वहाँ 'पूर्ण विराम' का प्रयोग होता है।
3. वाक्य में प्रश्न पूछने के बाद सदैव प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग होता है।
4. विस्मयादि-वाक्यों में आश्चर्य, हर्ष, घृणा आदि का भाव प्रकट करते समय अथवा किसी को पुकारते समय, कारक की अंतिम विभक्ति के रूप में इसका प्रयोग किया जाता है।
जैसे: वाह! क्या बात है।
प्रश्नवाचक वाक्य में प्रश्न पूछने के बाद सदैव प्रश्नवाचक चिह्न लगाया जाता है।
जैसे: तुम इतने परेशान क्यों हो?

(ख) 1. मेरी छड़ी कमरे में रखी है।   2. अरे! अजय ने चोरी की है।
3. वह यहाँ आया और चला गया।   4. कौन आया और कौन गया?
5. राजीव ने पूछा–"यह क्या हो गया विजय?"

विविध:

पूर्ण विराम (।), अल्पविराम (,), अर्द्ध विराम (;), प्रश्नसूचक (?), विस्मयादिबोधक (!), उद्धरण चिह्न (" ") योजक (-), लाघव (.)

अध्याय-18 : मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

(क) 1. ब   2. स   3. स   4. स

(ख) 1. ल   2. र   3. य   4. व   5. अ

6. ब   7. स   8. द

(ग) मुहावरे: 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10   लोकोक्ति: 1, 2, 3

लिखित:

(क) * मुहावरा ऐसे शब्दों का समुच्चय होता है, जो अपने साधारण अर्थ को छोड़कर विशेष अर्थ को प्रकट करता है। जैसे: कोल्हू का बैल (बहुत मेहनती)। लोकोक्तियाँ स्वत: पूर्ण वाक्य होती हैं। जैसे: अंधों में काना राजा।

* लोकोक्ति का प्रयोग स्वतंत्र रूप से भी किया जा सकता है जबकि मुहावरा वाक्य में प्रयुक्त होकर ही अपना अर्थ देता है।

* लोकोक्ति भूतकाल का लोक-अनुभव लिए होती है जबकि मुहावरा अपने रूढ़ अर्थ के लिए प्रसिद्ध होता है।

(ख) 1. दुष्ट आदमी सारे वातावरण को गंदा कर देता है।
2. मूर्खों में थोड़ा जानने वाला भी विद्वान माना जाता है।
3. बहुत प्रयत्न करने पर भी लाभ कम होना।
4. कम गुणों वाला आदमी बहुत घमंड करता है।
5. अपराधी के साथ निरपराध भी हानि उठाता है।

विविध:

1. तुमने ही उसके साथ कुछ गलत किया होगा, जो वह इतना चिल्ला रहा है, आखिर एक हाथ से ताली नहीं बजती।
2. धन के लोभ में शर्मा अंकल के नौकर ने उनके घर के सारे राज़ दुश्मन को बता दिए। सही कहा है– 'घर का भेदी लंका ढाए।'
3. हरिद्वार पहुँच कर हमने गंगा स्नान भी कर लिया और विवाह में भी शामिल हो गए। इसे कहते हैं– 'एक पंथ दो काज।'
4. बड़े संघर्षो के बाद आखिर सीमा को एक अच्छी नौकरी मिल ही गई। 'अंत भले का भला।'
5. आजकल के तो अधिकांश नेता थाली के बैंगन हैं।

अध्याय 19 : कहानी लेखन

1. एक गाँव में एक दूधवाला था। वह शहर में दूध बेचने जाता था। दूध में पानी मिलाकर बेचता था। एक दिन शहर से लौटते समय उसने नदी किनारे स्नान करने की सोची। उसने दूध के कमंडल सँभाल कर किनारे पर रख दिए। रूपयों की पोटलियाँ भी एक ओर रख दीं। पेड़ पर बैठा बंदर यह सब देख रहा था। वह धीरे से पेड़ से उतरा। वह पैसों की थैली उठाकर पेड़ पर चढ़ गया। ग्वाले को चिढ़ाते हुए, बंदर एक-एक पैसा नदी में फेंक रहा था। यह सब देख ग्वाले ने अपना सिर पकड़ लिया। उसे अपनी चोरी, अपनी बेइमानी की सज़ा मिल गई। पानी का पैसा पानी में मिल गया।

   शिक्षा– लालच बुरी बला है।
2. एक जंगल में एक ऊँट और एक गीदड़ रहता था। दोनों अच्छे दोस्त थे। वे दोनों खेत में खरबूजे खाते और मज़े से अपना पेट भरते थे। एक दिन खरबूजे खाने के बाद गीदड़ ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा ऊँट ने उसे बड़ा समझाया कि वह ऐसे न चिल्लाए, वरना खेत का किसान आ जाएगा। परंतु गीदड़ न माना। गीदड़ की आवाज़ से खेत का किसान जो सो रहा था वह जाग गया और लाठी लेकर खेत में आया। गीदड़ किसान को आता देख बड़ी तेज़ी से भाग गया। ऊँट बेचारा खुद को बचाने की चिंता में पड़ गया। अगले दिन ऊँट ने गीदड़ को नदी में सैर कराने का प्रस्ताव दिया। ऊँट ने यह सोचकर झट हाँ कर दी, कि वह मज़े से ऊँट की पीठ पर बैठकर सैर का आनंद लेगा। नदी के बीच गीदड़ को अपनी पीठ पर बिठाकर जब ऊँट ने पानी में डुबकी लगाई तो गीदड़ ने उसे कहा–"अरे! अरे! डुबकी तो न लगाओ! मैं डूब जाऊँगा" इस बार ऊँट ने उसकी एक न सुनी। उसने दुबारा डुबकी लगाई और गीदड़ डूब गया। ऊँट ने गीदड़ से बदला ले लिया। गीदड़ को अपनी करनी का फल मिल गया।

   शिक्षा– जैसे को तैसा।
3. एक जंगल में एक लोमड़ी और एक कौआ रहता था। एक दिन लोमड़ी को बड़ी भूख लगी थी। सामने पेड़ पर उसने देखा एक कौटा रोटी का टुकड़ा मुँह में लिए बैठा था। बस फिर क्या था! चालाक लोमड़ी उस कौए से बोली– "तुम कितने सुंदर हो! तुम्हारे जैसा सुंदर कौआ तो इस पूरे जंगल में नहीं। मैंने सुना है, तुम गाते भी बहुत अच्छा हो। ज़रा एक गाना तो सुनाओ।" कौआ उसकी चिकनी-चुपड़ी बातों में आ गया। जैसे ही कौए ने गाने के लिए मुँह खोला, रोटी का टुकड़ा नीचे गिर गया। लोमड़ी टुकड़ा उठाकर चंपत हो गई। कौआ देखता रह गया।

   शिक्षा– हमेशा अपनी समझ से काम लेना चाहिए, दूसरों की बातों में नहीं आना चाहिए।

अध्याय 20 : अनुच्छेद लेखन

1. आज की आवश्यकता : कंप्यूटर

   'कंप्यूटर' वास्तव में आज हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग बन चुका है। इसका उपयोग हर घर में, हर कार्यालय में होता है। कंप्यूटर ने हमारे जीवन को सरल बना दिया है। इससे हमारे समय की भी काफ़ी बचत होती है। आजकल कंप्यूटर के बिना काम करने की हम कल्पना भी नहीं कर सकते। स्कूलों में अब कंप्यूटर शिक्षा को अनिवार्य कर दिया गया है। यह आज की माँग बन चुका है। अनेक कठिन कार्य कंप्यूटर की मदद से बड़ी ही आसानी से किए जा सकते हैं। 'ऑन लाइन शिक्षा' भी कंप्यूटर के माध्यम से ही संभव हो पाई है। तो, हम कह सकते हैं, कि आज कंप्यूटर के बिना जीवन संभव नहीं।

2. पेड़ और मानव जीवन

   मानव जीवन में पेड़ कितनी अहम् भूमिका निभाते हैं, यह तो हम सभी जानते हैं। पेड़ हमें ऑक्सीजन देते हैं, जिसकेु बिना जीवन ही संभव नहीं। वृक्षों से हमें फल, फूल, छाया, लकड़ी, दवाइयाँ और न जाने क्या-क्या मिलता है। ये वृक्ष प्रकृति का गहना होते हैं, जो हमारी प्रकृति को हरा-भरा रखते हैं। बिना किसी स्वार्थ के ये वृक्ष हमारा भला करते हैं। पक्षी अपना घोंसला इन वृक्षों पर बनाते हैं। बहुत-से पेड़ों की पूजा भी की जाती है। जैसे– नीम, पीपल, बरगद, केला। इनमें ईश्वर का वास माना जाता है। इसलिए मनुष्य को इन पेड़ों का सम्मान करना चाहिए। इन्हें काटना नहीं चाहिए, अधिक-से-अधिक पेड़ लगाकर धरती का संरक्षण करना चाहिए।

3. सुबह की सैर

   'स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है।' स्वस्थ शरीर पाने के लिए सबसे जरूरी है– सुबह की सैर। सुबह के सम सैर करने से हमें अनगिनत फायदे होते हैं। सुबह की ताज़ी हवा हमारे फेफड़ों के लिए बहुत लाभकारी होती है। यह हवा प्रदूषण से रहित होती है। उगते सूरज की किरणें त्वचा के लिए बहुत अच्छी होती हैं। सुबह की सैर का अपना अलग ही आनंद होता है। प्रकृति का एक सुंदर नज़ारा देखने को मिलता है। सुबह-सुबह फूलों पर ओस की बूंदें मोती जैसी प्रतीत होती हैं। इसलिए तनाव मुक्त तथा सुखी जीवन के लिए सभी को सुबह की सैर जरूर करनी चाहिए।

4. समाचार पत्र

   यदि हम संसार के किसी भी कोने में घट रही घटनाओं की ताज़ा खबर पाना चाहते हैं, तो समाचार-पत्र से बढ़िया और कोई साधन नहीं। बहुत-से लोग हैं, जिनका सुबह उठते ही पहला साथी समाचार-पत्र होता है। और क्यों न हो? समाचार पत्र घर बैठे आपको देश-विदेश की सारी खबरों से अवगत करा देता है। इसमें खेल, राजनीति, सामाजिक मुद्दे, फिल्मी दुनिया, व्यापारी वर्ग-सबकी खबरें पाई जाती हैं। इस समाचार

पत्र के ज़रिए हम नौकरियों के लिए आवेदन भी कर पाते हैं। सबसे बड़ी बात, इसमें कोई खर्चा भी नहीं होता। इससे जो महत्वर्ण सूचनाएँ हमें मिलती हैं, उनकी तुलना में इसकी कीमत बहुत ही कम होती है। अतः हम सबको समाचार-पत्र नियमित रूप से पढ़ना चाहिए।

अध्याय 21 : संवाद लेखन

(क) रमेश : अरे सुरेश! कैसे हो?

सुरेश : मैं बिल्कुल ठीक हूँ, तुम बताओ मित्र कैसे हो?

रमेश : बस सब बढ़िया। दोस्त क्या तुमने गणित का गृहकार्य पूर्ण कर लिया?

सुरेश : हाँ, बस चार प्रश्न शेष हैं।

रमेश : मित्र मुझे तो शुरू के तीन प्रश्न समझ ही नहीं आ रहे। क्या तुम मेरी थोड़ी मदद करोगे?

सुरेश : हाँ, हाँ क्यों नहीं। बताओ क्या समस्या आ रही है?

रमेश : क्या मैं आज शाम को तुम्हारे घर आ जाऊँ?

सुरेश : ज़रूर दोस्त। हम मिल कर गणित के सभी प्रश्न हल कर लेंगे। चिंता न करो।

रमेश : धन्यवाद मित्र! मिलते है शाम को।

(ख) साहिल : नमस्ते रवि! आज बड़े दिनों बाद आए पार्क में।

संदीप : अरे भाई! पार्क की हालत तो देखो, मन ही नहीं करता यहाँ आने का।

साहिल : यह तो तुम सही कह रहे हो। कितना सुंदर पार्क होता था यह कुछ समय पहले और अब....

संदीप : वैसे देखा जाए, तो यह गंदगी फैला तो वही लोग रहे हैं, जो पार्क में आते हैं।

साहिल : बिल्कुल, जो लोग अपने घरों को इतना साफ रखते हैं, वे पता नहीं सार्वजनिक स्थनों का ध्यान क्यों नहीं रखते?

संदीप : देखो कैसे जगह-जगह कूड़े के ढेर लगे पड़े हैं।

साहिल : गंदगी मचाने वाले लोग इतना भी नहीं सोचते, कि वे अपने ही पैर पर कुल्हाड़ी मार रहे हैं। यह गंदगी उनके स्वास्थ्य के लिए कितनी हानिकारक है।

संदीप : हाँ, सारा दायित्व सरकार का थोड़ी है, प्रत्येक नागरिक को इस पार्क की सफाई के प्रति जागरूक होना होगा।

(ग) अध्यापक : रोहन! आज फिर विद्यालय आने में देरी! तुम्हारी समस्या क्या है?

रोहन : सर, माफ कर दीजिए। आगे से ऐसा नहीं होगा।

अध्यापक : बेटा, यह तो तुम प्रतिदिन बोलते हो! अपने पिताजी का नंबर बताओ। आज उनसे बात करनी ही होगी।

रोहन : सर, अब ऐसा नहीं होगा। कल रात को बहुत देर से सोया, इसलिए सुबह नींद ही नहीं खुली।

अध्यापक : तुम्हें कितनी बार तो समझा दिया कि समय से सोने व उठने की आदत डालो, पर तुम्हारे कान पर तो जूँ नहीं रेंगती।

रोहन : सर, वादा करता हूँ, आज से समय पर सोऊँगा।

अध्यापक : ठीक है, एक आखिरी मौका और दे रहा हूँ तुम्हें। अगली बार तुम्हारे माता-पिता को विद्यालय बुलाऊँगा, ध्यान रखना।

रोहन : जी अध्यापक जी, अब आपको शिकायत का मौका नहीं दूँगा।

ज्ञान सरोवर हिंदी व्याकरण

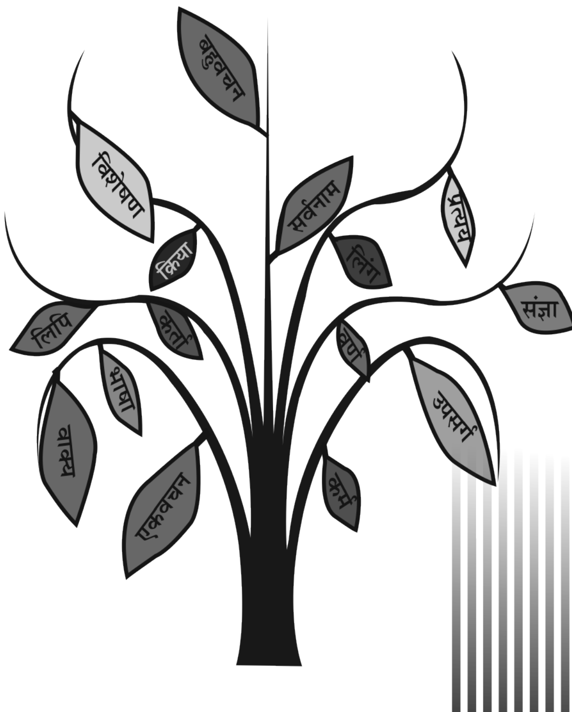

YBPL

YELLOW BIRD PUBLICATIONS PVT. LTD.

EDUCATIONAL PUBLISHER

Regd. Off. : F-214, Laxmi Nagar, Delhi-110 092

Tel. : 91-11-2254 1336, 971 16 18765

E-mail : yellowbirdpublications@gmail.com • info@yellowbirdpublications.com

Website : www.yellowbirdpublications.com